विलक्षण पर्यावरणविद

रेचिल कारसन

एमी, चित्र : वेन्डेल, हिंदी : विदूषक

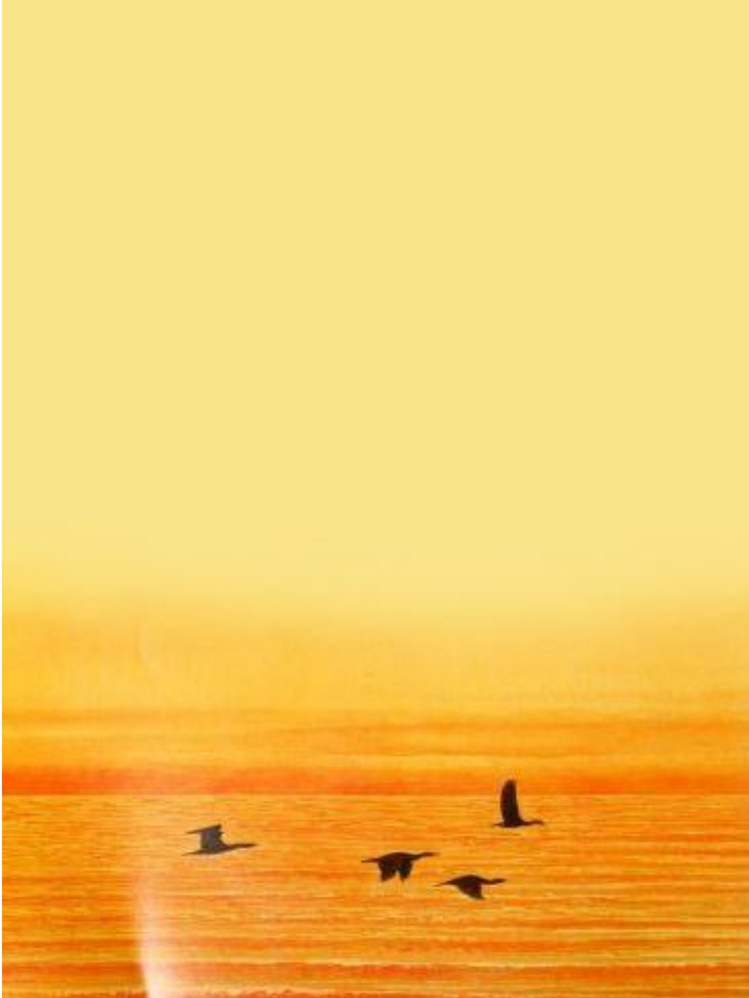


विलक्षण पर्यावरणविद

रेचिल कारसन

एमी, चित्र : वेन्डेल, हिंदी : विदूषक







समुद्री जीवाश्म

(1912)



रेचिल का घर समुद्र से बहुत दूर था. उसका घर समुद्र-तट से सैकड़ों मील दूर, पेनसिलवेनिया में एलेघनी नदी के पास था. वहां पर न समुद्री-चीलें, न शार्क्स और न ही व्हेल थीं. पर एक दिन उसे एक जीवाश्म (फॉसिल) मिला जो उसके पैरों के पास एक पत्थर में धंसा था. उसने उस जीवाश्म को अपनी माँ को दिखाया. फिर उन्होंने उसका वर्णन एक किताब में खोजा. माँ ने कहा कि वो जीवाश्म किसी समुद्री जीव का था. करोड़ो वर्ष पहले ज़मीन, समुद्र के पानी से ढंकी थी. तब समुद्र ने उस जीवाश्म को ज़मीन पर छोड़ा होगा.

कल्पना करो! खेतों और बगीचों के पार, जंगल के पार, जहाँ रेचिल अपने कुत्तों के साथ खेलती थी, उसके शहर एलेघनी, और पिट्टसबर्ग से भी दूर, वहां अभी भी अथाह समुद्र के अवशेष बाकी थे. उस रात जब रेचिल पलंग पर लेटी तो उसके विचार लहरों की तरह ही, एक-दूसरे से टकरा रहे थे.



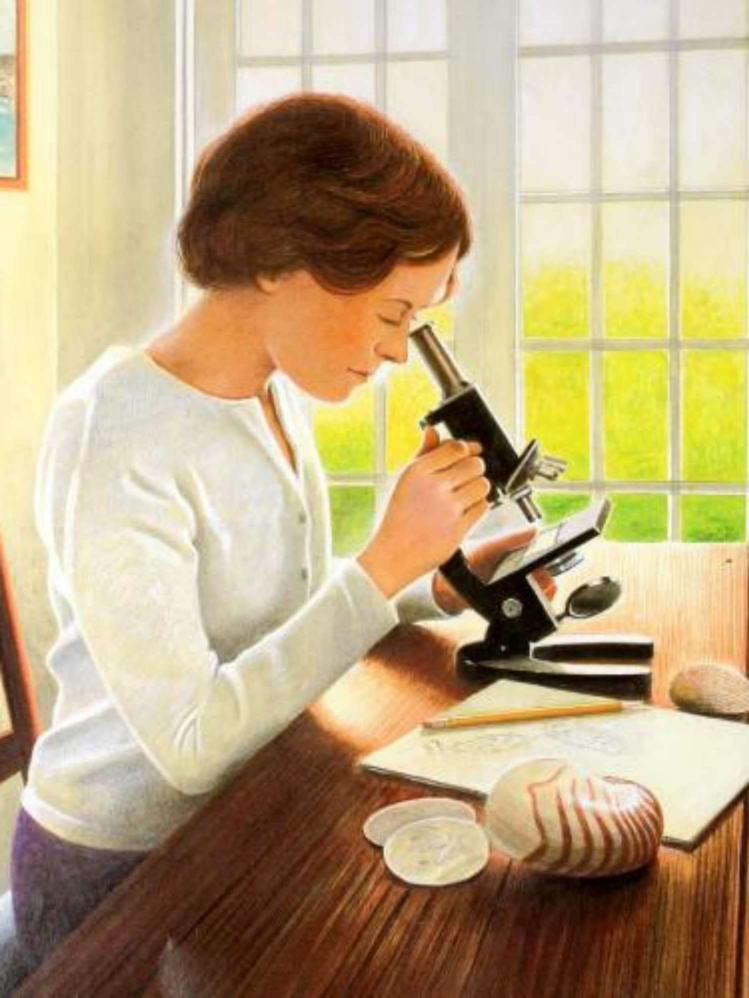
चांदी का बिल्ला (1918)



रेचिल की सबसे पक्की दोस्त उसकी माँ थीं. दोनों, रोजाना दोपहर के बाद बाहर घूमने जातीं और वहां हरेक कीड़े, चिड़िया और पेड़-पौधों का नाम जानने की कोशिश करतीं. वो किताबें पढ़तीं और साथ-साथ प्रकृति का अध्धयन करतीं. रेचिल अपने परिवार में सबसे छोटी थी. वो सबसे अलग, अकेली और होशियार थी. माँ ने रेचिल को बताया कि वो अपने भाई रोबर्ट और बहन मरिआना से बिल्कुल अलग थी. इसलिए माँ की रेचिल से कई अपेक्षाएं भी थीं.

हर महीने रेचिल डाकिये द्वारा लाई *सेंट निकोलस* मैगज़ीन का इंतज़ार करती. इस पत्रिका में छपने वाली सबसे अच्छी कहानियां, बच्चों द्वारा खुद लिखी होतीं थीं. अगर किसी बच्चे की कहानी छपने के लिए चुनी जाती तो उसे पुरुस्कार में सोने या चांदी का एक बिल्ला मिलता. फिर रेचिल ने भी उन्हें एक कहानी लिखकर भेजी. उसका नाम था, “बादलों में युद्ध,” वो कहानी हवा में लड़े युद्ध के बारे में थी.

उसे कहानी भेजे एक महीना हो गया. फिर दो, तीन, चार और पांच महीने. उसके बाद *सेंट निकोलस* का जो अंक आया उसमें रेचिल की कहानी छपी थी. रेचिल को उसके लिए एक चांदी का बिल्ला मिला.



माइक्रोस्कोप के नीचे

(1927)



रेचिल जीवशास्त्र पढ़ रही थी. वैसे रेचिल एक लेखिका बनना चाहती थी. पर *पेनसिलवेनिया कॉलेज फॉर वीमेन*, जहाँ वो पढ़ती थी, वहां हरेक छात्र के लिए विज्ञान पढ़ना अनिवार्य था. उसकी टीचर मिस स्किंकर ने, माइक्रोस्कोप के नीचे रेचिल की स्लाइड को फोकस किया. उसके बाद रेचिल को एक पारदर्शी, लम्बा पैरामीशियम जीवाणु, माइक्रोस्कोप की स्लाइड पर तैरता हुआ दिखाई दिया. रेचिल को लगा कि उस पैरामीशियम पर बने नमूने, कांच की खिड़की पर बारिश द्वारा, नदी पर रेत द्वारा, और आसमान में बादलों द्वारा बने नमूनों जैसे ही थे. एक-कोशिका के उस जीव में, रेचिल को पूरे ब्रह्मांड की जटिलता नज़र आई.

अगली बार जब रेचिल की माँ उससे मिलने आईं तब रेचिल ने उन्हें बताया कि अब वो जीवशास्त्र (बायोलॉजी) में ही आगे की पढ़ाई करेगी. वैसे रेचिल को बचपन से ही प्रकृति से प्रेम था. पर अब वो प्रकृति का गहराई से अध्ययन करना चाहती थी.



वुड्स-होल
(1929)

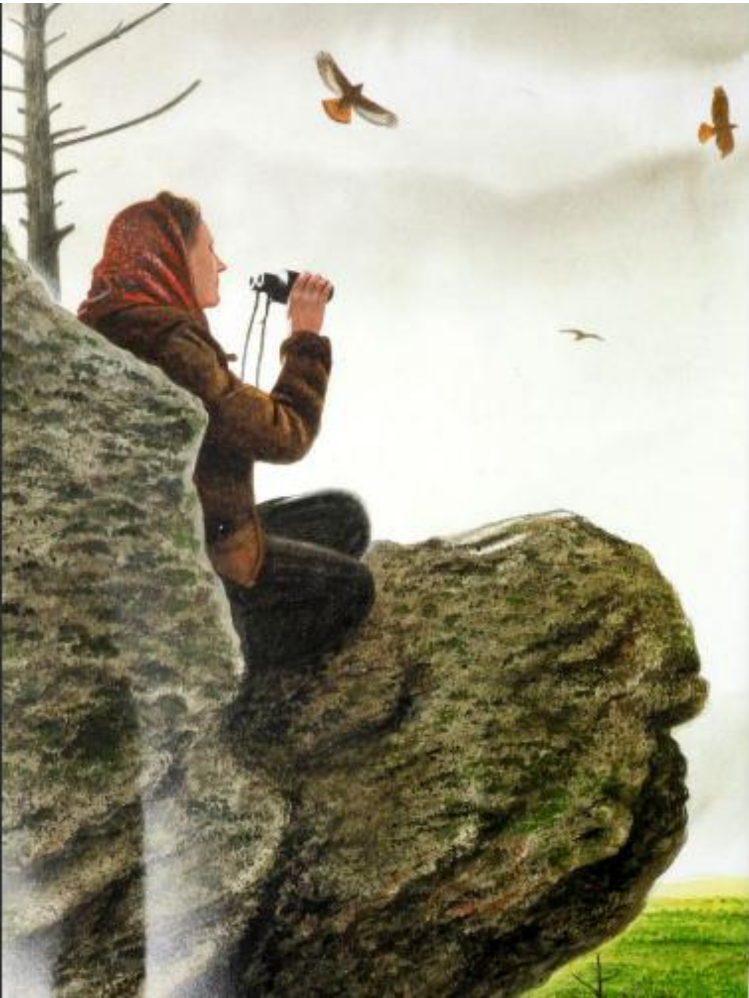


केप-कॉड में *वुड्स-होल मरीन बायोलॉजी लेबोरेटरी*, समुद्र से घिरी थी. वहां पर रेचिल के लिए काम करना, उसका सपना साकार होने जैसा था. वहां पर प्रयोगशाला में वो उन्हीं मेजों पर काम करती, जहाँ यूनिवर्सिटी के प्रसिद्ध जीवशास्त्री अपना शोध-कार्य करते थे. वहां पर महिला-पुरुष वैज्ञानिक अपना शोध-कार्य मुक्त वातावरण में कर सकते थे. वहां रेचिल ने, कछुए के मस्तिष्क के एक तंतु (नर्व) पर काम किया.

रेचिल की कॉलेज की दोस्त मैरी फ्र्ये भी वुड्स-होल में काम करती थी. जब ज्वार में समुद्र में पानी का स्तर नीचे होता तो रेचिल और मैरी, समुद्र तट पर घूमने जाते. समुद्र की आती-जाती लहरें एक-दूसरे से टकरातीं, और रेत पर समुद्री-खरपत बिछ जाती. पर जब ज्वार-भाटा आता तब समुद्र में उफान आता और रेत पर सभी पुरानी लकीरें मिट जातीं. रेचिल समुद्र के इस सुन्दर नज़ारे को एक लेखक की निगाह से निहारती. फिर वो वुड्स-होल प्रयोगशाला की लाइब्रेरी में ज्वार-भाटे क्यों आते हैं, उनके कारणों को ढूँढती.









हॉक माउंटेन
(1945)

कारसन परिवार में हमेशा पैसों की तंगी रहती थी. रेचिल के पिता किसी भी नौकरी में बहुत समय तक नहीं टिके. अब मारिआन और रोबर्ट्स भी घर वापिस आ गए थे. मारिआन के अब दो बच्चे भी थे. पूरे परिवार की आर्थिक ज़िम्मेदारी अब सिर्फ रेचिल के कन्धों पर ही थी. रेचिल को एक नौकरी मिली, जिसमें उसे अमरीकी मछली विभाग के दस्तावेजों को, सम्पादित करना था.

रेचिल जहाँ भी जाती वो अपने साथ एक कॉपी ज़रूर लेकर जाती. वो जो कुछ देखती उसके बारे में कॉपी में लिखती. जब हफ्ते के अंत में वो हॉक माउंटेन गई तब भी उसके पास वो कॉपी थी. वो पहाड़ पर थी और उसे नीचे घाटी से ऊपर कोहरा उठता दिख रहा था. बाज़, गर्म हवाओं पर तैरते हुए समुद्र की यात्रा कर रहे थे.

रेचिल को लगा कि वो प्रकृति के बारे में सुन्दर लेख लिख सकती थी और उससे कुछ पैसे भी कमा सकती थी. इस सोच से उसकी संकुचित और सीमित ज़िन्दगी को, एक नया आयाम मिला.

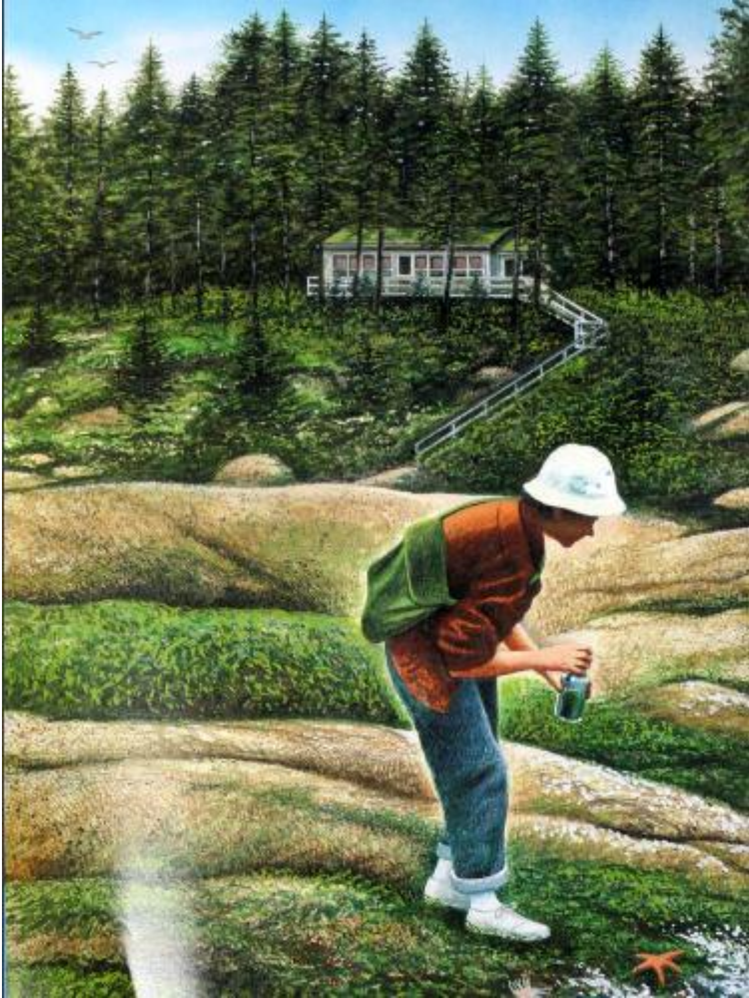


हमारे आसपास का समुद्र (1951)



रेचिल ने जो पुस्तकें लिखीं उसमें उसने समुद्र का विस्तृत वर्णन किया. सूरज से रोशन समुद्र की सतह पर जीवाणु प्लैंकटन, सूक्ष्म पौधों – डायटम को खाते थे. एक चुल्लू समुद्री पानी में, करोड़ों डायटम होते थे. सतह के थोड़ा नीचे एक प्रजाति की मछलियां, दूसरी मछलियों का शिकार करती थीं. इनमें हेरिंग, अन्चोवी, मैकरील, वाइट-शार्क और ब्लू-व्हेल शामिल थीं. और समुद्र में सैकड़ों-हजारों फीट नीचे, जहाँ पहाड़ियाँ थीं, वहां ऐसी मछलियाँ थीं जिनका पूरा शरीर दीप्तिमान था और चमकता था. इससे उन्हें अपना शिकार खोजने में मदद मिलती थी.

पाठकों को, रेचिल के लेखों के माध्यम से, समुद्र के रहस्यों को जानने और उसकी गहराईयों में घूमने में बहुत मज़ा आता था. अभी वो समुद्र तट पर खड़े थे और क्षितिज के देख रहे थे जो पृथ्वी की गोलाई के कारण उन्हें मुड़ा हुआ दिख रहा था. उन्हें रेचिल के लेखों से समुद्र की सुन्दरता और उसमें छिपे रहस्यों, और उसमें रहने वाले जीवों का ज्ञान भी मिलता था.



नमूने इकट्ठे करना

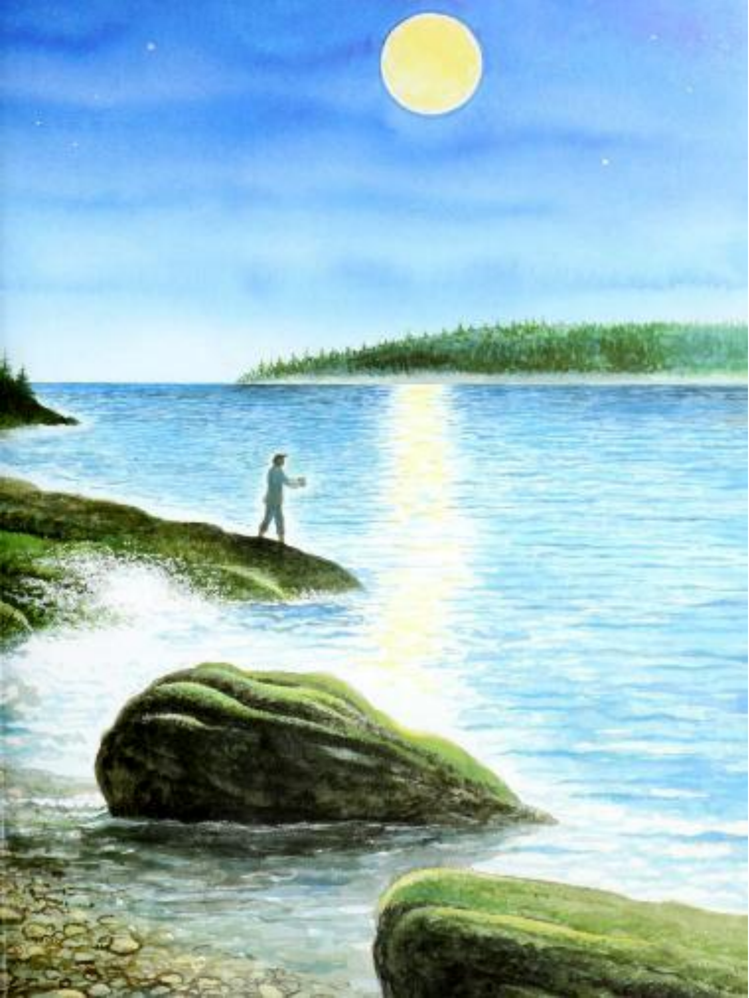
(1953)

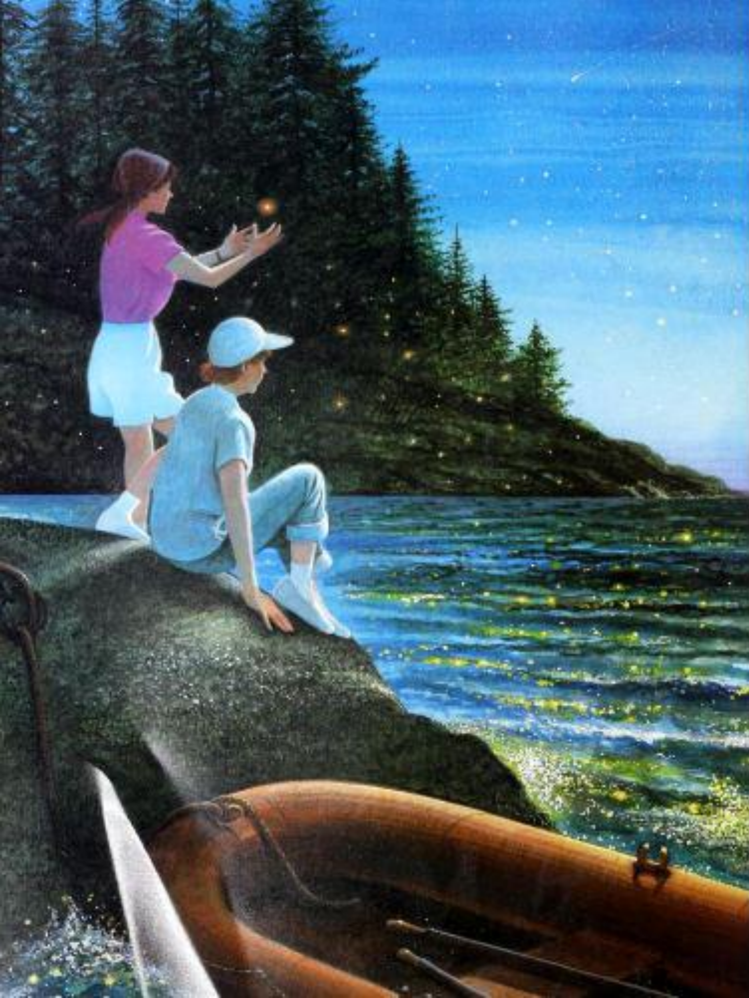


रेचिल ने मेन शहर की शीपस्कॉट नदी के मुहाने पर अपने लिए एक छोटा घर बनवाया. उस स्थान का नाम था – डॉगफिश-हेड. घर उंचाई पर था. घर से पत्थरों की सीढ़ियाँ उसे नदी के तट तक ले जाती थीं. रेचिल दिन में कई दफा उन सीढ़ियों पर चढ़ती-उतरती थी. और हर बार वो कुछ नए प्रकृति के नमूने इकट्ठे करती थी. उनकी बारीकियों को वो बाद में, अपने माइक्रोस्कोप से निहारती थी. इन नमूनों में तमाम छोटे-छोटे समुद्री जीव होते जैसे – छोटी स्टारफिश, गुलाबी हाइड्राइड, हरे स्पोंग – जो पौधे नहीं बल्कि जीव थे. वे सभी समुद्र में धीमे-धीमे तैरते और अपने भोजन की तलाश करते थे.

नमूने एकत्रित करने का सबसे अच्छा समय वसंत का मौसम होता था. तब नया-चाँद, ज्वार-भाटा लाता था. रेचिल के अनेकों मित्र भी उसके साथ रहने के लिए आते थे और वो भी माइक्रोस्कोप से समुद्री नमूनों को निहारते थे. रेचिल नमूनों का अध्धयन करने के बाद उन्हें हमेशा उसी स्थान पर छोड़कर आती, जहाँ से उसने वो नमूने लिए थे.







फोस्फोरेंस
(1956)



अगस्त की एक तेज़ हवा वाली रात जब ज्वार-भाटे से पानी उफान पर था, तब रेचिल और उसकी भतीजी मारजी, नाव को बाँधने के लिए समुद्र तट पर गए. तब उन्होंने लहरों पर एक नया नज़ारा देखा. पानी की लहरें, हरे और रुपहले रंगों से चमक रही थीं और फिर रेत पर गिर रही थीं. फिर रेचिल और मारजी ने एक अकेली रोशनी को उड़ते हुए और पानी में गिरते हुए देखा. एक जुगनू अपने साथियों को खोजने के चक्कर में कहीं खो गया था. अगर सही समय पर उन्होंने उसे नहीं पकड़ा होता तो वो निश्चित रूप से डूब जाता.

रेचिल को यह कहानी बेहद पसंद आई. दो अलग-अलग प्रजातियाँ आपस में एक-दूसरे से कैसे संवाद करती हैं, उसका यह एक सुन्दर उदाहरण था. वो इस घटना के ऊपर एक बच्चों की किताब लिखना चाहती थीं. पर उसके एक साल बाद ही मारजी का देहांत हो गया. फिर रेचिल पर मारजी के बेटे रॉजर की देखभाल की ज़िम्मेदारी आ पड़ी. रॉजर उस समय सिर्फ पांच साल का था. काफी समय तक रेचिल ने खुदको बहुत असहाय – बिलकुल उस खोए हुए जुगनू जैसा महसूस किया.



लुप्त जंगल

(1957)



रेचिल के घर के पास स्प्रूस के पेड़ों का एक झुरमुटा था, पर खुले स्थानों में रेनडियर-मोस (काई) उगती थी. सूरज की धूप में, चीड़ के पेड़ों से सुन्दर सुगंध आती थी. अगर तकदीर अच्छी हो तो आप वहां पर रुपहली थ्रश पक्षी का, संगीत भी सुन सकते थे.

गर्मियों में रेचिल की मित्र डोरोथी फ्रीमैन, उसके साथ आकर रहती थी. दोनों को आसपास के जंगल बेहद पसंद थे और उन्हें वहां घूमने में बहुत सकून और चैन मिलता था. पर एक दिन उन्होंने देखा कि डॉगफिश-हेड से जाने वाली सड़क को, शहर के अधिकारी चौड़ा कर रहे थे. मेन शहर में, बहुत से लोग ज़मीन और घर खरीद रहे थे. रेचिल और डोरोथी को लगा कि जल्दी उनका समुद्र तट भी, विकास की चपेट में आ जायेगा और सदा के लिए लुप्त हो जायेगा. रेचिल को पता था कि जीवों और इंसानों को अभ्यारण्यों – जंगलों की ज़रुरत होती है. फिर रेचिल ने आसपास में जंगल खरीदने की सोची जिससे कि वहां की प्राकृतिक सुन्दरता सदा बरक़रार रहे. पर जंगलों के मालिकों ने उन्हें नहीं बेंचा.

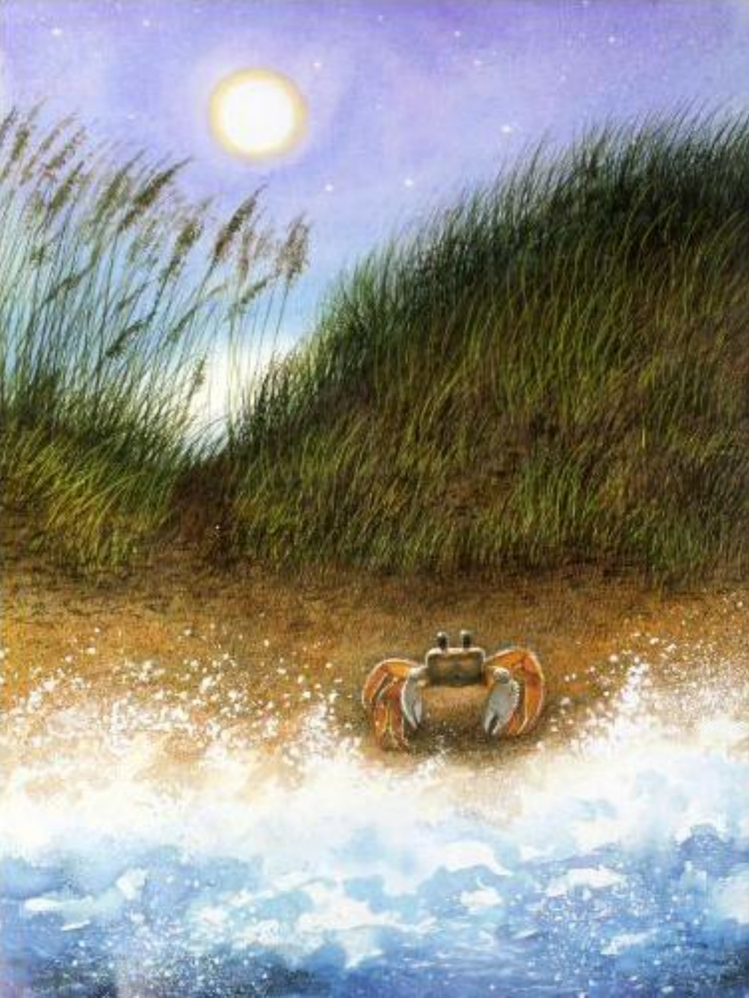


सुनना
(1958)



रेचिल हर बात ध्यान से सुनती थी. उसे मिसेस ओल्गा ओवेन्स हकिन्स का एक पत्र मिला. उसमें लिखा था कि हवाई-जहाजों द्वारा मच्छर मारने वाले कीटनाशक छिड़कने के बाद उनके यहाँ पर सभी सोंग-बर्ड्स – पक्षियों की मृत्यु हो गयी थी. मिसेस हकिन्स ने उसका कारण जानने के लिए कई कीट-विशेषज्ञों और पक्षी वैज्ञानिकों को पत्र लिखे. सभी से उन्हें दर्दनाक और भयावह उत्तर मिले. वैज्ञानिकों के अनुसार चिड़िये, टिड्डे, तितलियाँ, मधुमक्खियाँ, नदी की मछलियाँ सभी मर रही थीं. उन कीटनाशकों का ज़हर सभी जगह फ़ैल रहा था – घास पर जिसे गाय खाती थीं, दूध में, मांस में, और लोगों के शरीरों में भी.

रेचिल को दुनिया से बहुत प्रेम था. यह सुनकर उसे डर लगा, पर उसे बहुत गुस्सा भी आया. लोग भला अपनी दुनिया को कैसे इतना नुकसान पहुंचा सकते थे? क्या उन्हें नहीं पता था कि दुनिया में हर जीव, जीवन के एक जटिल जाल द्वारा, एक-दूसरे से जुड़ा है?

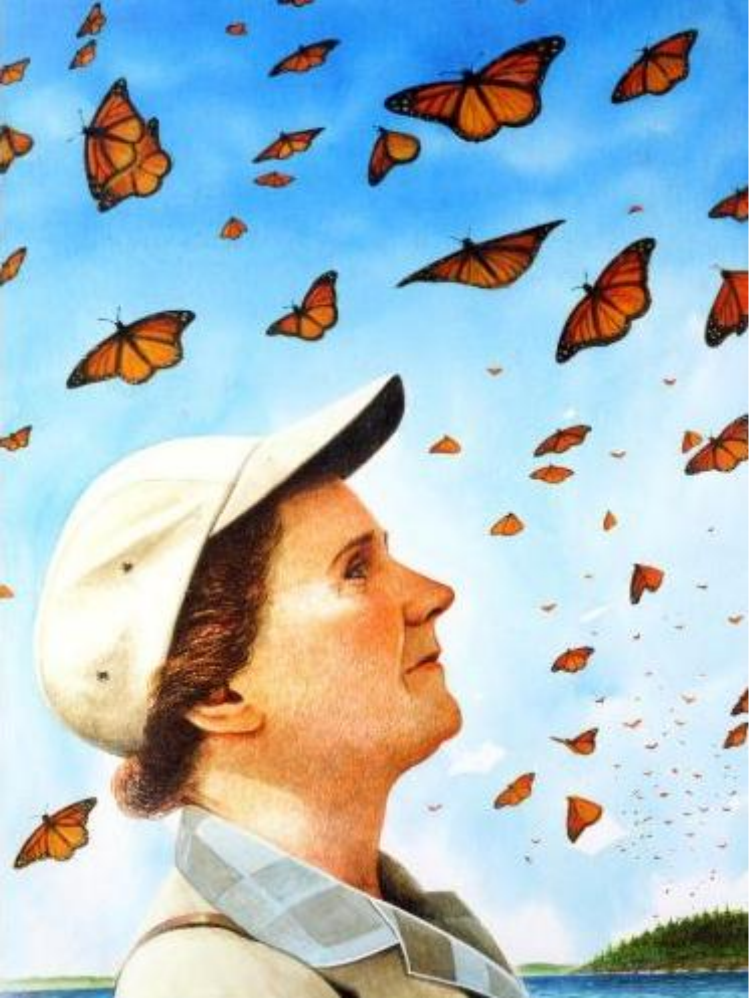


साइलेंट स्प्रिंग
(1962)



रेचिल ने कीटनाशकों के खतरों के बारे में जो कुछ खोज की और तथ्य इकट्ठे किये उसके आधार पर चार साल के परिश्रम के बाद, उसने एक पुस्तक लिखी. उसने पुस्तक का नाम *साइलेंट स्प्रिंग* रखा. क्यों? अगर कीटनाशकों से पक्षी मरेंगे, फिर वसंत के समय उनका संगीत भी सुनाई नहीं पड़ेगा. "साइलेंट स्प्रिंग" के छपने के बाद कीटनाशक बनाने वाली कंपनियों ने पुस्तक पर जमकर हमला बोला. उन्होंने रेचिल को भी नहीं बक्शा. आखिर, वो एक साधारण महिला थी, भावनाओं से भरी. उसकी बात पर भला कैसे यकीन किया जा सकता था?

पर बहुत से अन्य लोगों ने रेचिल की बात पर विश्वास किया. उन्होंने बहुत चर्चा और बहसें कीं –अखबारों में, टेलीविज़न पर, वाशिंगटन - यानि राजधानी में. अंत में अमरीकी कांग्रेस ने कीटनाशकों द्वारा विनाश की तहकीकात के लिए एक कमेटी गठित की. रेचिल, दोनों खेमों के साथ बड़ी शांति से पेश आई. उसे पता था कि जो कुछ वो कर सकती थी वो उसने किया था. वो बिल्कुल उस छोटे, पारदर्शी केकड़े जैसी थी, जिसके बारे में उसने कभी लिखा था. वो केकड़ा समुद्र तट पर बिलकुल अकेला, शक्तिशाली लहरों की मार सह रहा था.



तितलियों का पलायन
(1963)



रेचिल को अपनी निजी मुश्किल के लिए भी अपनी हिम्मत और ऊर्जा संजोकर रखनी थी. वो कैंसर से पीड़ित थी और अपनी ज़िन्दगी की लड़ाई लड़ रही थी.

सितम्बर की एक दोपहर को जब मेन का आसमान गहरा नीला था और सुनहरे डंडी वाले फूल खिल रहे थे, तब रेचिल और डोरोथी फ्रीमैन नेवागेन पॉइंट पर गयीं और वहां उन्होंने मोनार्क तितलियों के पलायन को देखा. तितलियाँ एक-एक करके उठीं, बहुत संख्या में. उनके पंख बेहद नाज़ुक थे, जो धूप में, रंगीन कांच जैसे चमक रहे थे. वो मोनार्क तितलियां, मेक्सिको की ओर पलायन कर रही थीं. उनमें से सिर्फ कुछ तितलियां ही वापिस आएँगी.

बाद में रेचिल ने अपनी दोस्त से कहा कि उसे उदास होने की कोई ज़रुरत नहीं है. उसने कहा कि तितलियों के सामान ही इंसानों का भी एक जीवन-चक्र होता है. रेचिल का पृथ्वी पर समय अब समाप्त होने वाला था. पर प्रकृति का चक्र लगातार ज़ारी रहेगा. वसंत के बाद फिर सर्दी का मौसम आयेगा. मछलियाँ समुद्र में तैरेंगी और पक्षी आकाश में संगीत गायेंगे.



अंतिम शब्द

14 अप्रैल 1964 को, रेचिल कारसन का देहांत हुआ. राष्ट्रपति की सलाहकार समिति ने कीटनाशकों पर अपनी रिपोर्ट पेश की. रिपोर्ट ने DDT और अन्य कीटनाशकों के ज़हरीले प्रभाव की पुष्टि की. आजकल सभी लोग इस बात को स्वीकार करते हैं कि दुनिया में पर्यावरण-आन्दोलन, रेचिल कारसन की पुस्तक *साइलेंट स्प्रिंग* के प्रकाशन के बाद ही शुरू हुआ.

